35.0 अधिगम संवर्धन में आकलन की भूमिका: चुनौतियां एवं सुझाव

- **निधि राय,** असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, दिग्विजय नाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर
  Email- nidhirai1504@gmail.com

शोध-सार

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का केंद्र बिंदु शिक्षार्थी होता है। सम्पूर्ण अधिगम प्रक्रिया का उद्देश्य उसका उच्चतम विकास होता है। चूंकि प्रत्येक विद्यार्थी अद्वितीय क्षमता धारक होता है अतः उसके विकास का प्रथम चरण उसकी योग्यता एवं अंतः शक्ति को जानना है। इसके साथ ही उसकी योग्यता एवं अधिगम संप्राप्ति के बीच के अंतर को जानकर उसके अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया को इस प्रकार आयोजित करना है जिससे शिक्षार्थी का अधिगम अधिकतम हो। इसके लिए उसके अधिगम का सतत् रूप से आकलन करते रहना आवश्यक है जिससे उसके अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में आ रही बाधाओं को दूर करने की दिशा में सही समय पर सार्थक प्रयास किया जा सके। चूंकि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली योगात्मक मूल्यांकन केन्द्रित है, अतः अधिगम संवर्धन हेतु सतत् आकलन की दिशा में बहुत सारी चुनौतियां हैं जिनके समाधान हेतु निरंतर प्रयास की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध लेख उन चुनौतियों एवं उनके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द *– अधिगम संवर्धन, अधिगम वातावरण, आकलन*

प्रस्तावना

किसी भी शिक्षण संस्थान में शिक्षकों द्वारा किए जा रहे शिक्षण कार्य का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के अधिगम एवं उपलब्धि के स्तर का संवर्धन करना है। प्रत्येक कक्षा में विभिन्न पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि के छात्र होते हैं। उनकी पृष्ठभूमि का इनकी अधिगम क्षमता पर पर्याप्त प्रभाव देखने को मिलता है। इस प्रकार कक्षा में उपस्थित बच्चों की क्षमता एवं योग्यता का स्तर बहुत अधिक भिन्न होता है। इसलिए शिक्षक की एक प्रमुख जिम्मेदारी प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकता, रुचि एवं योग्यताओं को समझना एवं उनके अनुरूप शिक्षा योजना का निर्माण करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मार्गदर्शक सिद्धांत है "हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान एवं उनके विकास हेतु प्रयास करना (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 6)। प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमता कक्षागत आकलन के द्वारा सतत् रूप से एकत्र सूचनाओं की सहायता से ज्ञात की जा सकती है।

अधिगम संवर्धन हेतु आकलन

आकलन से तात्पर्य विद्यार्थी के विषय में उसके व्यक्तित्व, रुचि बुद्धि, योग्यता, क्षमता, सीखने की गति आदि के विषय में सूचनाओं को संग्रहित कर उसे विद्यार्थी के संदर्भ में उचित निर्णय लेने की प्रक्रिया से है। इस प्रकार की क्षमताओं की पहचान कर बच्चे के विकास हेतु वे स्वयं, शिक्षक एवं अभिभावक द्वारा प्रयास किया जा सकता है। "यह शिक्षकों को न केवल प्रत्येक बच्चे के सीखने में आ रही परेशानी को समझने में मदद करता है बल्कि विद्यार्थियों की आवश्यकता और सीखने की शैली के अनुसार उनके शिक्षण अधिगम को विचार, समीक्षा और संशोधित करने में भी मदद करता है (निष्ठा, प्रशिक्षण पैकेज, माड्यूल 4, पृष्ठ 91)।"

प्राचीन काल से ही गुरु द्वारा शिष्य की अधिगम क्षमता का आकलन नितांत अनौपचारिक तरीके से किया जाता रहा है। गुरु शिष्य की व्यक्तिगत क्षमता एवं गति का आकलन कर उसी के अनुसार शिक्षण प्रक्रिया का आयोजन करते थे। जिससे उनकी क्षमता का संवर्धन हो पाता था। नितांत अनौपचारिक रूप से चलने वाली आंकलन की यह प्रक्रिया वर्तमान शिक्षा पद्धति में वर्षांत परीक्षा केंद्रित एवं औपचारिक हो गई है। जहां वर्ष भर के अधिगम का दो-तीन घंटे के अंदर मापन कर लिया जाता है। क्यों कि कार्य पूर्ण

हो जाने के बाद उसके विषय में केवल निर्णय लिया जा सकता है, उसे सुधारा नहीं जा सकता। यह किसी भी तरह से न तो शिक्षार्थी के हित में है और ना ही शिक्षक के हित में। "चूंकि सीखने के विभिन्न पहलू होते हैं इसलिए किसी भी प्रकार की वार्षिक या बाह्य परीक्षा बच्चों के व्यक्तित्व का सही आकलन नहीं करती। सतत आकलन, न केवल बच्चों का समग्र विकास करता है, अपितु शिक्षकों और समस्त शैक्षिक तंत्र की सही रूपरेखा निर्धारित भी करता है, जिससे शिक्षक विभिन्न पणधारकों की मदद से उपयुक्त साधनों को जुटाकर अपनी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर चिंतन-मनन कर उसमें सुधार ला सकते हैं (सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, दिशानिर्देश, 2020, पृष्ठ 6)।" वर्षपर्यंत सतत् रूप से चलने वाले आकलन का उद्देश्य बच्चों को अगली कक्षा में पहुंचने या ना पहुंचने देने के निर्णय से कहीं अधिक है। आकलन का प्रमुख उद्देश्य बच्चों की रुचि, क्षमता एवं आवश्यकताओं की पहचान करना है जिसके आधार पर शिक्षक अपनी कक्षा में आवश्यकतानुसार अधिगम वातावरण का आयोजन करता है। "यह आकलन छात्रों को अपने प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए मार्गदर्शित करता है और शिक्षक को यह निर्धारित करने में मदद करता है कि आगे के निर्देश आवश्यक हैं या नहीं (अधिगम के लिए ऑकलन, 2017, पृष्ठ 211)।" शिक्षक विद्यार्थियों की उपलब्धियों को जानकर, उनके अधिगम को समर्थित करने हेतु अपनी योजना का निर्धारण करता है, क्योंकि कक्षा में उपस्थित बालक विभिन्न योग्यता स्तर के होते हैं। ऐसे में शिक्षक द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी का विभिन्न माध्यमों से आकलन कर इस अंतर को पहचाना जा सकता है। यदि सीखने के शुरुआती समय में यह अंतर जान लिया जाए तो इसके द्वारा समय रहते अतिरिक्त एवं उपयुक्त योजना निर्माण द्वारा सीखने के अंतर को कम करने की दिशा में सार्थक प्रयास किया जा सकता है एवं इस प्रकार उन विद्यार्थियों का अधिगम संवर्धन किया जा सकता है। प्रत्येक बच्चे की अद्वितीयता की पहचान सतत् एवं व्यापक आंकलन द्वारा की जा सकती है। जिसकी सहायता से बच्चे की उपलब्धियों एवं क्षमता के संवर्धन हेतु शिक्षक अभिभावकों के साथ साझा रणनीति बना सकते हैं। "शिक्षक बच्चों के सीखने के अनुभवों की योजना बनाने और उन्हें व्यवस्थित करने के लिए नियमित रूप से चल रहे आकलन से मिलने वाली जानकारी का इस्तेमाल कर सकते हैं (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा- फाऊंडेशनल स्टेज 2022, पृष्ठ 173)।" आकलन के अंतर्गत सिर्फ शैक्षणिक पाठ्यक्रम का आंकलन ही नहीं वरन् विद्यार्थी के प्रत्येक क्रियाकलाप का नियमित अंतराल पर आंकलन सम्मिलित होता है।

आंकलन के उद्देश्य

"आकलन का मुख्य उद्देश्य बच्चों की सीखने की जरूरत को समझने के लिए, उन्हें अपनी दक्षता बढ़ाने में सहायता देना है और यदि सीखने में कोई परेशानी है तो उसे दूर करने में उसकी मदद करना है (निष्ठा, प्रशिक्षण पैकेज, माड्यूल 4, पृष्ठ 90) ।" आकलन के द्वारा अध्यापक बच्चों के सीखने का निरीक्षण समय-समय पर करते हैं जिसकी सहायता से वे बच्चों के सीखने में आने वाली कठिनाइयों को समझ कर उसे दूर करने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

आकलन के उद्देश्यों को बिंदुवार निम्नवत् रखा जा सकता है-

- बच्चों की सीखने की गति एवं क्षमता का पता लगाना एवं इस गति एवं क्षमता के अनुसार अधिगम संवर्धन हेतु वातावरण का निर्माण करना।
- बच्चों को उसकी उपलब्धियों का ज्ञान कराकर उसे सीखने के लिए प्रोत्साहित करना।
- अभिभावकों के एवं समाज के सदस्यों के साथ मिलकर बच्चों की क्षमता के इष्टतम विकास हेतु रणनीतियां बनाना।
- बच्चों को सिखाने में आ रही कठिनाइयों को जानकर उन्हें दूर करने हेतु योजनाबद्ध तरीके से उन्हें उन परेशानियों से दूर कर उनके अधिगम को समर्थित करना।
- विद्यार्थी क्या सीख चुके हैं और उन्हें निर्धारित अधिगम उद्देश्य की प्राप्ति हेतु क्या सीखने की आवश्यकता है, इसके विषय में जानकारी एकत्र करना।
- विद्यार्थी को अपने निर्धारित अधिगम उद्देश्य की प्राप्ति में सुधार की ओर अग्रसर करना।

- विद्यार्थी को अपने भविष्य हेतु निर्णय लेने का ठोस आधार प्रदान करना।
- शिक्षक को अपनी शिक्षण विधि, तकनीकी आदि में वांछित परिवर्तन हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना।

अधिगम संवर्धन हेतु आकलन में चुनौतियां

आकलन की सहायता से शिक्षक उन अधिगम परिस्थितियों का निर्माण कर पाता है जिनमें विद्यार्थी की अधिकतम अधिगम संप्राप्ति संभव हो। इसी प्रकार विद्यार्थी भी अपने प्रदर्शन में सुधार हेतु प्रोत्साहित होते हैं। सतत् एवं व्यापक आकलन हेतु शिक्षक को विद्यार्थियों के कार्यों का निश्चित अंतराल पर अवलोकन करते हुए उनके व्यवहारों का विश्लेषण करते रहना चाहिए। इसके लिए विभिन्न रणनीतियों को अपने शिक्षण का अंग बनाते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिए। "आकलन के प्रमुख सोपान सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण, शिक्षण बिंदुओं का चयन, व्यवहार परिवर्तनों को जानना आकलन करना तथा परिणाम को पृष्ठ पोषण के रूप में उपयोग में लाना है(अधिगम के लिए आकलन, 2016, पृष्ठ23)।"अधिगम क्रियाओं का आयोजन शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को गृह कार्य,समय-समय पर प्रशिक्षण, कक्षा में पढ़ाए गए विषय पर प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, कक्षा में प्रश्न पूछ कर, सीखे हुए से संबंधित विषय पर कहानी, चित्र ,सार आदि लिखना/ बोलना, उचित शीर्षक प्रदान करना, कोई टास्क देकर उनका अवलोकन करना आदि अनेक रणनीतियां हैं जिनमें शिक्षक को पारंगत होना चाहिए। आकलन संबंधी इन रणनीतियों के प्रयोग करते समय शिक्षक को चेक लिस्ट, संक्षिप्त नोट आदि का प्रयोग करना चाहिए। यथासंभव शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी का एनकडोटल अभिलेख, संचयी अभिलेख तैयार करना चाहिए। इन अभिलेखों को विद्यार्थी तथा अभिभावक के साथ साझा करना चाहिए जिससे इनका अधिगम संवर्धन हेतु सर्वोत्तम उपयोग हो सके।

चुनौतियां

- प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या इतनी ज्यादा होती है कि शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते। शिक्षक का कार्यभार दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जिससे शिक्षक के पास आकलन हेतु पर्याप्त अवसर नहीं मिल पा रहा है। पाठ्यक्रम समय से पूर्ण करने का दबाव, अन्य कागजी कार्यवाही, औपचारिक मीटिंग आदि इतने अधिक कार्यभार के दबाव से शिक्षक आकलन के कार्य को हाशिये पर रख देते हैं।
- चूंकि अधिकांश शिक्षक सत्रांत मूल्यांकन के ही उत्पाद होते हैं अतः उन्हें वर्षपर्यंत आकलन समय एवं ऊर्जा की बर्बादी ही लगती है। इसके साथ ही सतत् आकलन के नाम पर वह पाठ्य पुस्तकों के अंत में दिए हुए प्रश्नों की सहायता से विद्यार्थियों का आकलन कर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं।
- शिक्षकों का आकलन के वैध एवं विश्वसनीय तरीकों की जानकारी एवं आकलन प्रपत्रों के निर्माण में पारंगत ना होना, इस सतत एवं व्यापक आकलन की दिशा में एक बहुत बड़ी चुनौती है।
- आकलन से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण एवं उसके निष्कर्ष का कक्षागत अधिगम संवर्धन हेतु उपयोग के किस प्रकार उपयोग किया जाए, इसका ज्ञान यदि शिक्षक को ना हो तो आकलन से प्राप्त सूचनाए निरर्थक ही सिद्ध होती हैं।
- हमारे अधिकतर विद्यालयों में अधिगम संवर्धन हेतु आकलन के वैध व विश्वसनीय उपकरणों का अभाव है। अधिकतर शिक्षक सभी विद्यार्थियों के लिए आकलन के एक ही तरीके का उपयोग करते हैं। विविधता से भरे हुए कक्षाकक्ष में यह रणनीति - कदापि उपयोगी सिद्ध नहीं होती है।

सुझाव

इन चुनौतियों के समाधान हेतु कुछ सुझाव निम्नवत् है-

- विविधता भरे कक्षा कक्ष में यदि विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक होगी तो शिक्षक उन पर व्यक्तिगत ध्यान नहीं दे पाएंगे और इस प्रकार प्रत्येक विद्यार्थी की विशिष्ट क्षमता का आकलन नहीं हो पाएगा। इसलिए प्रत्येक कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या

उचित एवं निश्चित होनी चाहिए। विद्यालय में छात्रशिक्षक अनुपात मानक के अनुरूप होना चाहिए जिससे शिक्षक प्रत्येक - विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से जान सके एवं उनके व्यवहारों का अवलोकन व विश्लेषण के आधार पर आकलन कर सकें।

- शिक्षकों को वर्षपर्यंत व्यापक आकलन में महारत हासिल करने हेतु व्यावसायिक प्रशिक्षण दिए जाने की आवश्यकता है। जिससे वह आकलन की विभिन्न तकनीकों, उसके विभिन्न पक्षों एवं उसके उपयोग का ज्ञान अर्जित कर उसका विद्यार्थियों के अधिगम संवर्धन हेतु सर्वोत्तम उपयोग कर सकें।
- सतत् एवं व्यापक आकलन हेतु मानकीकृत उपकरणों की विस्तृत श्रृंखला की आवश्यकता है जिनका उपयोग कर शिक्षक एवं शिक्षार्थी बेहतर अधिगम की ओर उन्मुख हो सके।
- बच्चों के व्यक्तित्व के सामाजिक, सांस्कृतिक पहलुओं को जानने हेतु उनके दैनिक अनुभवों को साझा करने का अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे बच्चे पाठ में आए हुए बिंदुओं को ही ना दोहराकर स्वयं के विचारों को अभिव्यक्त करें। उनके द्वारा दी गई प्रस्तुति एवं उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के विश्लेषण के द्वारा उनके आकलन का प्रयास शिक्षक को करना चाहिए इसी प्रकार विद्यार्थियों को सामूहिक कार्य प्रोजेक्ट करने के अवसर /प्रदान कर उनके सामाजिक व्यवहार का अवलोकन करना चाहिए। यह अवलोकन जितना वस्तुनिष्ठ एवं पूर्वाग्रह रहित होगा अधिगम वातावरण के सृजन में उतना ही अधिक सहायक सिद्ध होगा।
- शिक्षक को अपने तकनीकी ज्ञान को भी अद्यतन करने की आवश्यकता है, जिससे वह अपने समय का सदुपयोग कर सके। बहुत से ऐसे सॉफ्टवेयर हैं जो शिक्षक के लिए सहायक हो सकते हैं और शिक्षक व्यवस्थित तरीके से उन सॉफ्टवेयर की सहायता से प्रत्येक विद्यार्थी के आकलन का रिकॉर्ड बना सकते हैं और अपने शिक्षा कारण को उनके अनुसार परिवर्तित / परिवर्धित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यदि सीखने के संदर्भ में बच्चे के विषय में अलग-अलग स्रोतों से जानकारी एकत्र की जाए तो यह बच्चों की अधिगम आवश्यकता एवं उसकी सीखने में आ रही किसी भी प्रकार की परेशानी को समझने में मददगार सिद्ध हो सकता है। साथ ही जो बच्चे शीघ्र अधिगम कर लेते हैं उन्हें उनके उपलब्धियों के आधार पर उनके क्षमता के बेहतर उपयोग हेतु शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की योजना शिक्षक द्वारा बनाई जा सकती है। इस प्रकार आकलन के द्वारा शिक्षक शिक्षार्थी तथा अभिभावक के सहयोग से अधिगम विद्यार्थी के अधिगम का संवर्धन किया जा सकता है जिससे वह अपनी क्षमता का सम्यक विकास कर सके। आकलन की यह प्रक्रिया इस प्रकार व्यवस्थित की जानी चाहिए जिससे कि शिक्षक पर इसका अतिरिक्त बोझ भी ना पड़े एवं विद्यार्थी भी स्वयं को दबाव में महसूस ना करें।

सन्दर्भ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020). मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार.
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद. (2019). निष्ठा— प्रशिक्षण पैकेज, माड्यूल 4. नई दिल्ली
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद. (2020). सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, दिशानिर्देश. नई दिल्ली .
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय. (2017). अधिगम के लिए ऑकलन. शिक्षक शिक्षा विभाग, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, हल्द्वानी.
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद. (2022). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा फाउंडेशनल स्टेज (एनसीएफएफएस). नई दिल्ली
उ०प्र० राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय.(2016). अधिगम के लिए आकलन. प्रयागराज